Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 8

सामाजिक विज्ञान

हमारे अतीत-III

अध्याय-5 : जब जनता बग़ावत करती है
1857 और उसके बाद

भाग-1
अंग्रेजों की नीतियाँ और उनका प्रभाव

निर्मल सिंह



Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण (Overview)

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. अंग्रेजों की नीतियाँ और उनका प्रभाव
2. सैनिक विद्रोह जनविद्रोह बन गया
3. कंपनी का पलटवार



Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

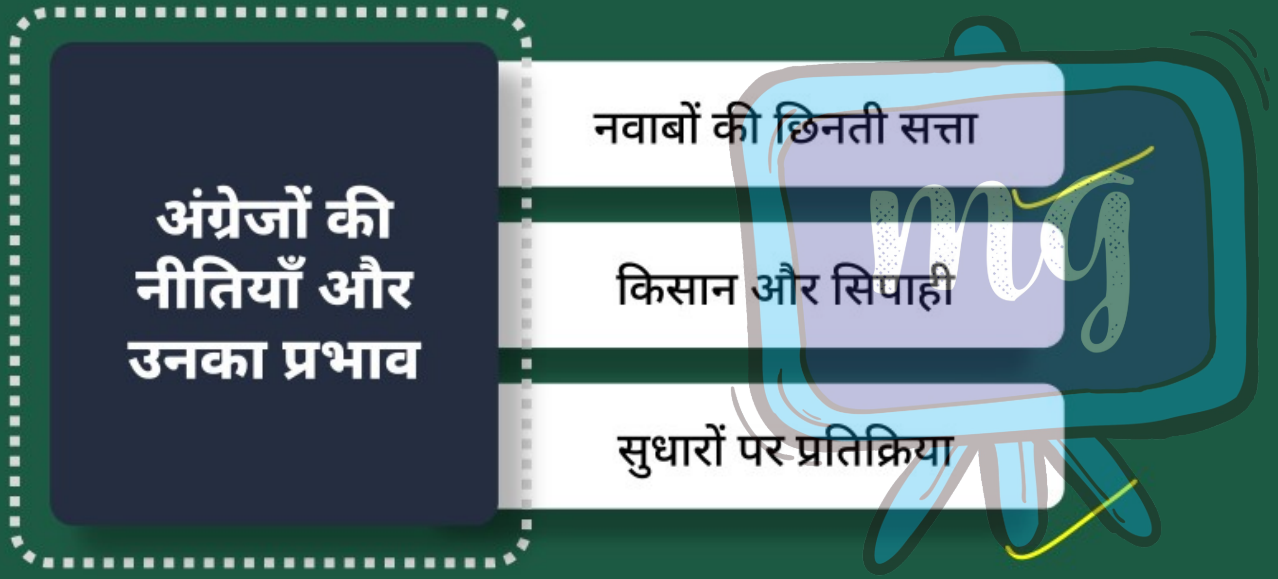

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नवाबों की छिनती सत्ता

- राजाओं और नवाबों की सत्ता और सम्मान, दोनों ख़त्म होते जा रहे थे।
- राजा और नवाबों के दरबारों में रेजिडेंट तैनात कर दिए गए थे।
- स्थानीय शासकों की सेनाओं को भंग कर दिया गया था।
- उनके राजस्व वसूली के अधिकार व इलाके एक-एक करके छीने जा रहे थे।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- रानी लक्ष्मीबाई चाहती थी कि कंपनी उनके पति की मृत्यु के बाद उनके गोद लिए हुए बेटे को राजा मान ले।
- पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहेब ने भी कंपनी से आग्रह किया कि उनके पिता को जो पेंशन मिलती थी वह मृत्यु के बाद उन्हें मिलने लगे।

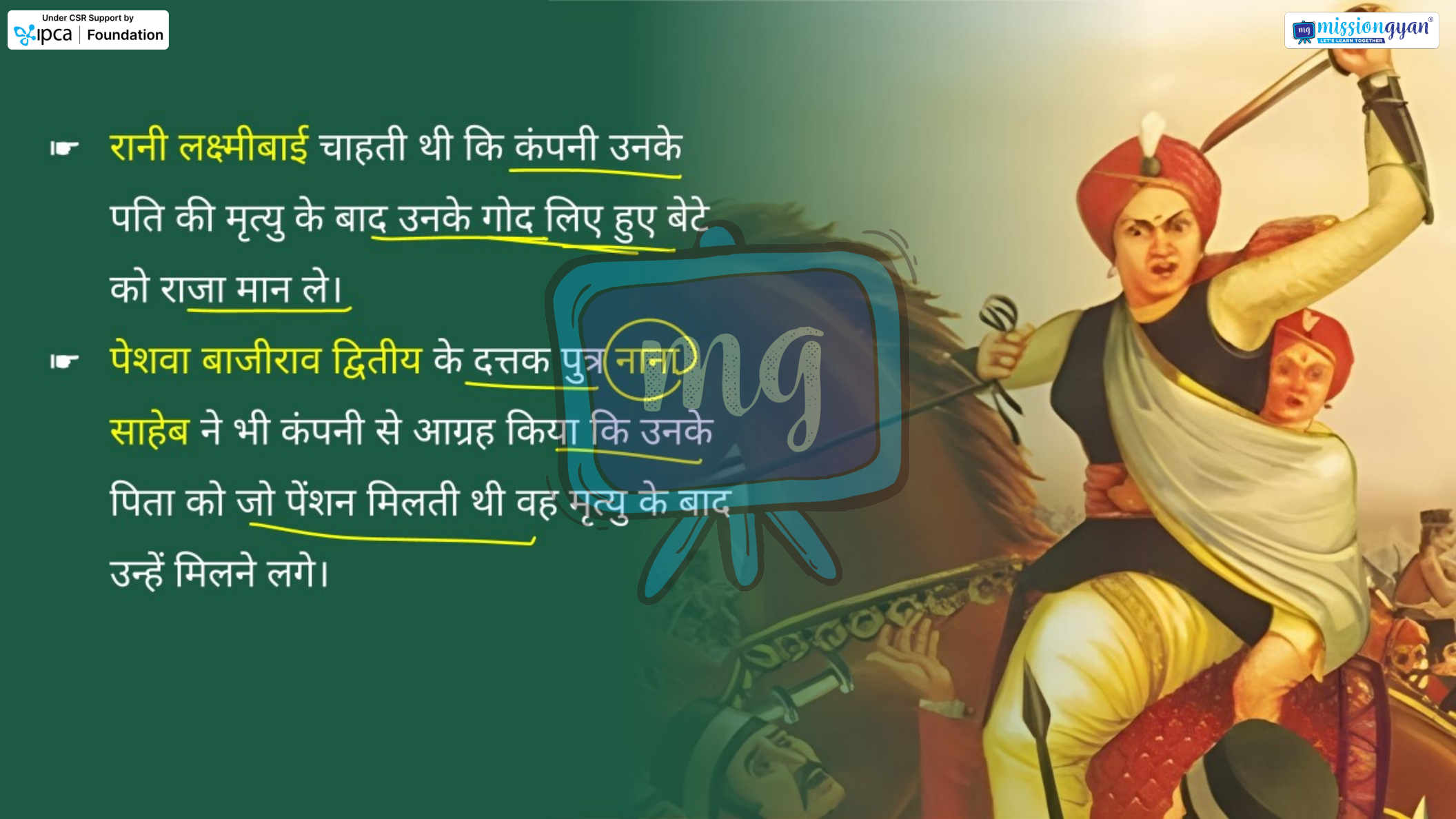

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- 1801 में अवध पर एक सहायक संधि थोपी गयी और 1856 में अंग्रेज़ों ने उसे अपने कब्ज़े में ले लिया।
- गवर्नर-जनरल डलहौज़ी ने ऐलान कर दिया कि शासन को दुरुस्त करने के लिए ब्रिटिश प्रभुत्व ज़रूरी है।
- कंपनी द्वारा जारी किए गए सिक्कों पर से मुग़ल बादशाह का नाम हटा दिया गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- 1856 में गवर्नर-जनरल कैनिंग ने फ़ैसला किया कि बहादुर शाह ज़फ़र आख़िरी मुग़ल बादशाह होंगे।
- उनकी मृत्यु के बाद उनके किसी भी वंशज को बादशाह नहीं माना जाएगा।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

किसान और सिपाही

- गाँवों में किसान कर वसूली के सख्त तौर-तरीकों से परेशान थे।
- कंपनी के तहत काम करने वाले भारतीय सिपाही अपने वेतन, भत्तों और सेवा शर्तों के कारण परेशान थे।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- कई नए नियम उनकी धार्मिक भावनाओं और आस्थाओं को ठेस पहुँचाते थे।
- बहुत सारे सिपाही समुद्र पार नहीं जाना चाहते थे।
- उन्हें लगता था कि समुद्र यात्रा से उनका धर्म और जाति भ्रष्ट हो जाएँगे।
- 1824 में सिपाहियों ने बर्मा जाने का आदेश मानने से इनकार कर दिया।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

☛ 1856 में कंपनी ने नया कानून बनाया जिसमें साफ़ कहा गया की जरुरत पड़ने पर सिपाहियों को समुद्र पार भी जाना पड़ सकता है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

सुधारों पर प्रतिक्रिया

- अंग्रेज़ों ने सती प्रथा को रोकने और विधवा विवाह को बढ़ावा देने के लिए कानून बनाए।
- अंग्रेज़ी शिक्षा को जमकर प्रोत्साहन दिया गया।
- 1830 के बाद कंपनी ने ईसाई मिशनरियों को खुलकर काम करने और यहाँ तक कि ज़मीन व संपत्ति जुटाने की भी छूट दे दी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

☛ 1850 में एक नया कानून बनाया गया जिसके तहत अगर कोई भारतीय व्यक्ति ईसाई धर्म अपनाता है तो भी पुरखों की संपत्ति पर उसका अधिकार पहले जैसा ही रहेगा।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जनता का अंग्रेजी शासन के प्रति नज़रिया

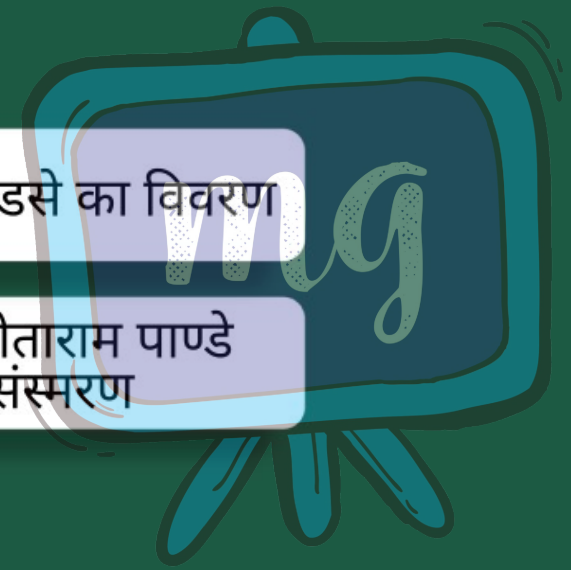

विष्णुभट्ट गोडसे का विवरण

सूबेदार सीताराम पाण्डे का संस्मरण

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विष्णुभट्ट गोडसे का विवरण

☛ महाराष्ट्र के ब्राह्मण विष्णुभट्ट गोडसे ने माझा प्रवास पुस्तक लिखी।

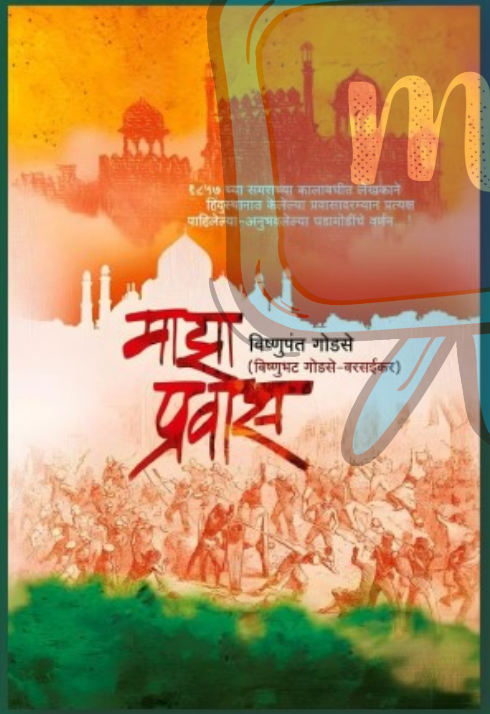

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- विष्णुभट्ट और उनके चाचा मथुरा में एक यज्ञ में भाग लेने के लिए निकले थे।
- रास्ते में उनकी मुलाकात कुछ सिपाहियों से हुई, जिन्होंने उन्हें वापस लौटने की सलाह दी।
- अंग्रेज़ सरकार ने चौरासी नियमों की एक सूची तैयार की।
- राजाओं ने कहा है कि अगर ये नियम लागू किए गए तो भारी उथल-पुथल मच जाएगी।
- मेरठ छावनी से एक गुप्त योजना तैयार करके विभिन्न छावनियों में भेज दी गई थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूबेदार सीताराम पाण्डे का संस्मरण

- सीताराम पांडे को 1812 में बंगाल नेटिव आर्मी में सिपाही के तौर पर भर्ती किया गया था।
- उन्होंने बग़ावत को दबाने में अंग्रेज़ों की मदद।
- उनका बेटा भी विद्रोहियों के साथ था और अंग्रेज़ों ने उसे सीताराम की आँखों के सामने ही मार डाला था।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- सीताराम ने 1861 में अवधी भाषा में अपने संस्मरण लिखे।
- जिनका नॉरगेट ने अंग्रेज़ी में अनुवाद किया।
- इस पुस्तक को फ्रॉम सिपॉय टू सूबेदार (सिपाही से सूबेदार तक) के नाम से प्रकाशित करवाया।



Under CSR Support by ipca Foundation

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. अंग्रेजों का बढ़ता प्रभुत्व
2. किसानों और सिपाहियों की दशा



Under CSR Support by ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1 नाना साहेब किसके दत्तक पुत्र थे?

अ पेशवा बाजीराव द्वितीय

ब बाजीराव प्रथम

स बालाजी बाजीराव

द इनमें से कोई नहीं

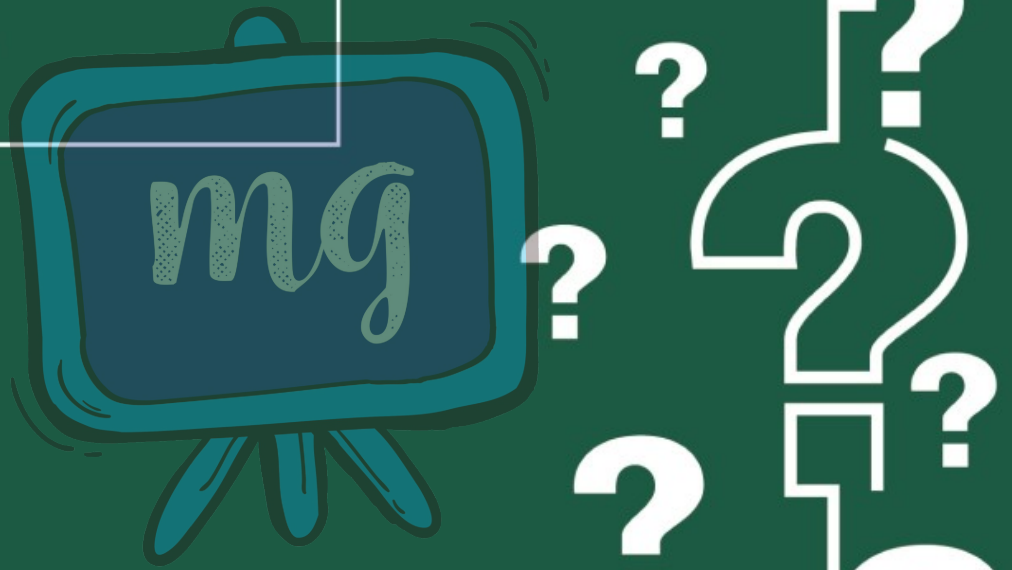

2 झाँसी की रानी क्या चाहती थी?

अ कंपनी उनका राज्य न हड़पे

ब कंपनी उनके गोद लिए बेटे को उत्तराधिकारी मानें

स (अ) और (ब) दोनों

द इनमें से कोई नहीं





Under CSR Support by ipca | Foundation

मूल्यांकन (Assessment)

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3 | अंग्रेजों द्वारा क्या सुधार किए गए थे?

अ सती प्रथा के खिलाफ़ कानून

ब विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन

स अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को बढ़ावा

द उपर्युक्त सभी

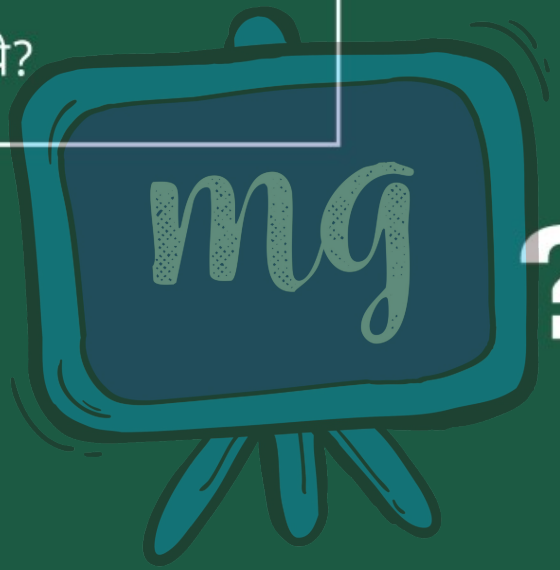



4 कंपनी ने सिक्कों से मुगल बादशाह का नाम हटा दिया था।

अ सत्य

ब असत्य





5 | कंपनी द्वारा ईसाई धर्म में परिवर्तन को आसान बनाने के लिए ------ में एक नया कानून पारित किया गया।

1850 ई.



